न देना चाहे कुबेर का धन

ना देना चाहे कुबेर का धन,
मगर सलीका सहूर देना।
उठा के सर जी सकूँ जहाँ में,
बस इतनी इज़्ज़त जरूर देना ।

ना बैर कोई न कोई नफरत, नज़र न आये कहीं बुराई ।
हर एक दिल में तू दे दिखाई, मेरी नज़र को वो नूर देना ॥
उठा के सर जी सकूँ...

बड़ी ना मांग में चीज़ तुमसे, औकात जितनी है मांगता हूँ ।
जो घाव दुःख ने दिए हैं दिल में, तू उसका मरहम जरूर देना ॥
ना देना चाहे कुबेर का धन...

(जब तक बिक ना था, तो कोई पूछता ना था
तुमने खरीद कर मुझे अनमोल कर दिया)

मैं मांगता हूँ ऐ मेरे कान्हा, वो चीज़ मुझको जरूर देना ।
मिले ज़माने के सारी दौलत, मगर ना मुझको गुरूर देना ॥
उठा के सर जी सकूँ जहां में...

ना देना चाहे कुबेर का धन, मगर सलीका सहूर देना ।
उठा के सर जी सकूँ जहाँ में, बस इतनी इज़्ज़त जरूर देना ॥

Uploaded By - श्री यादव (दिनेश) जबलपुर.

https://bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/1485/title/na-dena-chahe-kuber-ka-dhan-magar-saleeka-sahur-dena-utha-ke-sar-jee-sakun-jahan-me-bas-itni-izzat-jaroor-dena

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |